

करना 3. बनाना, रचना 4. सजाना क्रि. संचित होना, इकट्ठा होना।

सचनावत पुं. (देश.) परमेश्वर।

सचमुच अव्य. (देश.) यथार्थ, वास्तव में, निश्चित रूप से, अवश्य।

सचरना अ.क्रि. (तद्.) 1. संचरित होना, फैलाना, प्रचलित होना, प्रसिद्ध होना 2. प्रवेश करना।

सचराचर वि. (तत्.) 1. चल और अचल वस्तुओं से युक्त 2. जड़ और चेतन दोनों से युक्त पुं. विश्व, दुनिया, संसार।

सचल पुं. (तत्.) 1. जंगम पदार्थ, जो अचल न हो 2. जो एक स्थान पर स्थिर न हो 3. चलता-फिरता, गतिशील वि. चलने की शक्ति से युक्त।

सचल लवण पुं. (तत्.) साँचर नमक।

सचाई स्त्री. (तद्.) सत्यता, ईमानदारी, वास्तविकता।

सचान पुं. (तत्.) श्येन पक्षी, बाज।

सचारना स.क्रि. (तद्.) फैलाना, संचारित करना।

सचिंत वि. (तत्.) चिंतायुक्त, चिंतित, जिसे चिंता हो।

सचित वि. (तत्.) 1. बुद्धिमान, चेतनायुक्त, ज्ञानयुक्त 2. संवेदनापूर्ण।

सचित्त वि. (तत्.) जिसका ध्यान किसी एक विषय पर हो बुद्धिमान, सावधान।

सचिव पुं. (तत्.) 1. मित्र, दोस्त, साथी 2. मंत्री, अमात्य, वजीर 3. काला धतूरा।

सचिवालय पुं. (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ राज्य के प्रमुख विभागों के सचिवों और प्रमुख अधिकारियों के कार्यालय हों 2. किसी सरकार, संस्थान आदि के कार्यों के संचालन के लिए नियुक्त अधिकारियों, कर्मचारियों आदि का समूह 3. सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों आदि का कार्य-स्थल secretariat

सची स्त्री. (तद्.) 1. अगर, अगुरु 2. शची, इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी।

सचेत वि. (तत्.) 1. सावधान, समझदार, चेतना विशिष्ट, सजग 2. जिसमें चेतना हो।

सचेतक वि. (तत्.) 1. सचेत या सजग करने वाला पुं. 2. विधायिका, सभाओं, संसदों आदि में वह अधिकारी जिसका कर्तव्य सदस्यों को इस विषय में सचेत कराना होता है कि अमुक प्रस्ताव या विषय पर मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है 3. किसी दल का वह नामित सदस्य जिसे (विधायिका में) दल के हितों की रक्षा करने के लिए तथा अनुशासन बनाए रखने के लिए दल ने अधिकृत किया हो।

सचेतन वि. (तत्.) 1. चेतना युक्त 2. सजान, समझदार, सावधान, चतुर।

सचेता वि. (तत्.) समझदार।

सचेष्ट वि. (तत्.) चेष्टाशील, चेष्टा करने वाला पुं. आम का वृक्ष।

सच्चा वि. (तत्.) 1. सच बोलने वाला, सत्यवादी 2. ईमानदार, विशुद्ध 3. निष्कपट, जिसका व्यवहार छल-कपट पूर्ण न हो।

सच्चाई स्त्री. (तत्.) 1. ईमानदारी, वास्तविकता 2. सच्चा होने का भाव, सच्चापन, सत्यता।

सच्चिदानंद पुं. (तत्.) सत्, चित्, आनंद स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर।

सच्चिन्मय पुं. (तत्.) 1. सत् और चैतन्य स्वरूप 2. सत् और चैतन्य से युक्त।

सच्ची टिपाई स्त्री. (देश.) भारतीय मध्ययुगीन चित्रकला में चित्र बनाने के समय पहले रूपरेखा अंकित कर लेने के पश्चात् गेरु से अंकित करना।

सज स्त्री. (तद्.) 1. सजावट, सजे हुए होने का गुण 2. शोभा, सौंदर्य, रूप 3. (भवन आदि की) रचना/गठन का ढंग पुं. एक वृक्ष।

सजग वि. (तत्.) 1. सावधान, सचेत, जागरूक, सतर्क 2. चालाक, होशियार।

सजड़ा पुं. (देश.) सहिजन (वृक्ष)।